अंटार्कटिक का रोमांच
बर्फीले महाद्वीप को पार करना

लेखनः एना परेरा

चित्रः ट्रैवर पार्किन

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



अंटार्कटिक का रोमांच
बर्फीले महाद्वीप को पार करना

लेखनः एना परेरा
चित्रः ट्रैवर पार्किन
भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



अनुक्रम

परिचय

6 नवम्बर 1992 को एक स्की प्लेन (बर्फ पर उतर पाने वाला हवाई जहाज़) ने सर रैनॉल्फ फाइन्स और डॉ. माइक स्ट्राउड को अंटार्कटिक के छोर पर उतारा। वह उन्हें विश्व के पाँचवे सबसे बड़े महाद्वीप पर पसरी सफेदी पर छोड़ लौट गया, जो दुनिया की 90 प्रतिशत बर्फ का घर है।



खेजी सर रैनाफल्फ फाइन्स



डॉ. स्ट्राउड जिन्होंने रैनॉल्फ के साथ अंटार्कटिक का सफ़र पूरा किया

यह कहानी बिना किसी तरह की मदद के अंटार्कटिक को पार करने की ख़ौफनाक सत्य कथा है। कोई कुत्ते नहीं। बचाव के लिए इन्तज़ार करते कोई हवाई जहाज़ नहीं। खाने-पीने का सामान या उपकरण पहुँचाने के कोई व्यवस्था नहीं। दो इन्सानों, उनके ठंसे हुए स्लेज (बर्फ पर फिसलने वाले वाहन) और अव्वल कहलाने की उनकी ख़्वाहिश के सिवा और कुछ नहीं !

अध्याय 1

बेतहाशा ठूंसे हुए



अंटार्कटिक का परिदृश्य

क्या आपने कभी किसी हिमखण्ड को कट कर समुद्र में बहते देखा है? क्या कभी आपका सामना ऐसी हिम दरारों से हुआ है जो घरों से भी चौड़ी हों? क्या कभी आपकी आँखें बर्फ से चुंधियाई हैं? अंटार्कटिक दुनिया की ऐसी ख़तरनाक जगह है जिसकी कल्पना नहीं की जा सकती। साथ ही सबसे ठंडी जगह भी है। वहाँ एक भी गलत कदम, एक बदकिस्मत फैसला - और आपका काम तमाम हो सकता है!

रैनॉल्फ और माइक की स्लेजें ठसाठस लदी थीं। उन्हें अगले तीन महीनों के लिए जो कुछ चाहिए था, वह सब उन पर ठूंस-ठूंस कर लादा गया था। उनके पास इतने पैसे नहीं थे कि वे वह सब ख़रीद पाते जिसकी उन्हें ज़रूरत पड़ सकती थी। बेहद ज़रूरी चीज़ें, जैसे मुसीबत में फंसने पर उनको बचाने आने वाला स्की प्लेन। ऐसे में अगर कोई विपदा पड़ती . . . तो आप समझ ही सकते हैं कि क्या हश्र होता। उनके पास कोई वैकल्पिक योजना नहीं थी।

अगर उनमें से कोई घायल हो जाता तो उन्हें अपना सफ़र अधूरा छोड़ वापस लौटना पड़ता। सोचिए यह कितना शर्मनाक होता! दरअसल वे यह सफ़र परोपकार के लिए चन्दा उगाहने के लिए कर रहे थे। इसलिए वे यथासंभव धन इकट्ठा करना चाहते थे। बेशक वे बिना किसी तरह की मदद के अंटार्कटिक पार करने वाले पहले इन्सान भी बनना चाहते थे।

पहला दिन

रैनॉल्फ फाइन्स और माइक स्ट्राउड ने स्की प्लेन को दूर जाते देखा। जब वह उनकी नज़रों से ओझल हो गया, उन्होंने सावधानी से स्लेज को खींचने वाली पट्टियों को अपने कमर और कंधों पर बांधा और अपने चारों ओर पसरे शून्य को घूरने लगे।



दुरूह राह पर बढ़ने के लिए तैयार होते

यही परीक्षा की घड़ी थी। क्या उनकी स्लेजें खींच पाने के लिए बेहद भारी थीं? क्या वे उन्हें पीछे घसीटते हुए आगे बढ़ सकेंगे? उन्होंने ऐसा इससे पहले कभी किया भी तो नहीं था। यह कुछ ऐसा था मानो वे कड़ाके की ठंड में अपने चार साथियों को नहाने के टब में लाद कर एडिनबर्ग से लन्दन और तब पलट कर वापस एडिनबर्ग ले जाने वाले हों।

पट्टे चरमराए। वे धीमे-धीमे आगे बढ़े।

आख़िरकार वे चल पड़े। पहले-पहल मौसम अच्छा था; उनकी एकमात्र समस्या एक टूटे फ्लास्क की थी। सबसे बड़ी परेशानी थी दिन-ब-दिन उन भारी-भरकम स्लेजों को घसीटना। कई बार तो उन्हें स्लेज को चन्द मीटर और आगे घसीटने का ख़याल तक परेशान कर डालता था। पर यह तथ्य कि उन्हें अंटार्कटिक को इसी तरह पार करना है, उन्हें नाराज़गी और अवसाद से भर देता था।

तथ्य पेटी 'अ'

अंटार्कटिक संबंधी तथ्य:

4 करोड़ (40,000,000) वर्ष पहले अंटार्कटिक पेड़ों से भरा था।
2 करोड़ (20,000,000) वर्ष पहले वहाँ काफी बर्फ पसरने लगी थी।
1 करोड़ 20 लाख (12,000,000) वर्ष पहले वहाँ विशाल बर्फ की चादर (आइस शीट) बनने लगी थी।
पृथ्वी के दोनों ही ध्रुव इसलिए इतने ठंडे हैं क्योंकि वे सूर्य से ऐसे कोण पर झुके हैं कि वहाँ सूरज का ताप भूमध्य रेखा की तुलना में सिर्फ 40 प्रतिशत ही होता है।



कुछ समय बाद रैनॉल्फ को लगने लगा कि उसकी स्लेज एक भयंकर राक्षस है जिसे मार डालना चाहिए।

यह ख़याल उसे आगे बढ़ने को तब-तब उकसाता, जब भी उसके स्की पीछे के दिशा में फिसलते।

जैसे ही स्की पीछे फिसलते स्लेज के पट्टे उसके कूल्हों में धारदार छुरियों से घुसते और कमर पर बंधे पट्टे उसकी चमड़ी को छीलते। जल्द ही रैनॉल्फ के कंधे की हड्डी मुड़ गई।

पर इस दर्द को झेलना भी उस ऊब की तुलना में आसान था जो उन्हें अब पगला रही थी। क्या आपने कभी एक पूरा दिन अपने सोने के कमरे में बिछे कालीन को घूरते जाने के सिवा कुछ न करते बिताया है? तो यह कल्पना करें कि आपके पास सप्ताह-दर-सप्ताह पसरी हुई बर्फ को घूरने के सिवा देखने को कुछ न हो!

सो उन्होंने तय किया कि वे नैविगेशन का (मार्ग तलाशना/तय करना) काम अदल-बदल कर करेंगे। हमेशा किसी के पीछे चलना बेहद मुश्किल होता है। जब आप अगुआई करते हैं तो आप कम्पस की मदद से आगे बढ़ने का सबसे सही रास्ता तलाशने में मशगूल होते हैं। आपको आगे की जगह को ध्यान से देखना पड़ता है, आने वाली समस्याओं का अंदाज़ा लगाना पड़ता है। आपके पास करने को कुछ होता है। सोचने को कुछ होता है। पर जब आप अगुवाई करने वाले का पीछा करते हैं, तो करने को कुछ नहीं होता। सोचने को भी कुछ नहीं होता। यह आपको पगला देता है।

वे अक्सर अगुवाई के काम की अदला-बदली करते। रैनॉल्फ का, जो हमेशा अगुवाई करने का आदी था, पारा तब लगातार चढ़ जाता, जब अगुवाई करने की माइक की बारी आती।



फाइन्स व स्ट्राउड के बीच की दूरी - जो आपसी मनमुटाव का कारण भी थी - और बढ़ती गई

माइक अधिक चुस्त-दुरुस्त था, कद में छोटा और उम्र में ग्यारह साल कम था। सो जब भी वह अगुवाई करता हमेशा अधिक दूरी पार कर लेता।

इससे दोनों के बीच समस्याएं पैदा हुईं। रैनॉल्फ ने कहा कि माइक बहुत तेज़ रफ्तार से बढ़ता है, ऊर्जा बर्बाद करता है और ज़्यादा कैलोरी काम में लेता है। उनके पास नपातुला खाना है जिसे पूरे सफ़र के दौरान चलाना है। साथ ही उनका वज़न अगर तेज़ी से घटता है तो भारी मुश्किल हो सकती है। पर माइक को खुद को अपनी सीमा के परे धकेलने में मज़ा आता था। उसे रैनॉल्फ के पीछे घिसटना नापसन्द था, खास कर तब, जब रैनॉल्फ अचानक रस्ता बदलता और माइक को उस फैसले का कारण ही समझ न आता।

अध्याय 2

आँखे चुंधिया देने वाली बर्फ

आप वहाँ हो, आँखों को चुंधिया देने वाल बर्फ पर। आपके सामने एक झुकी हुई आकृति के सिवा कुछ नहीं है। और जितनी बार वह अगला छींकता है, नाक सुड़सुड़ाता है, या घुटने खुजलाता है, वह आवाज़ हज़ार गुना बढ़ कर सुनाई देती है। कुछ समय बाद आप चीख कर कहना चाहते हो कि चुप करो!

छोटे अभियानों की आम समस्या यह होती है कि आप जो कुछ घटे उसका दोष अपने साथी के मत्थे मढ़ते हो। नाराज़ होने के लिए कोई और तो होता ही नहीं। ज़रा सोचिए कि सप्ताह-दर-सप्ताह आप सिर्फ एक ही इन्सान के साथ हो।

स्कॉट के मशहूर अंटार्कटिक अभियान के एक खोजी ने कहा था कि बिस्किट का एक कतरा खो देने ने उसे ऐसी मनोदशा में धकेल दिया जो सप्ताह भर चली।

पर इस जानकारी ने भी हमेशा रैनॉल्फ और माइक को दोस्ताना बनाए रखने में मदद नहीं की।

एक दिन जब माइक अगुवाई कर रहा था, रैनॉल्फ अपनी काँख तक एक दरार में गिर गया। खुशकिस्मती से स्लेज के पट्टों ने उसे जकड़े रखा और वह बाहर निकल आया। इस बीच माइक लगातार आगे बढ़ता रहा। उसे तब तक घटना का पता ही नहीं चला, जब तक बाद में रैनॉल्फ ने उसे न बताया।





अल्युम्यूनियम की सीढ़ी की मदद से दरार को सावधानी से पार करता एक आरोही।

एक बर्फीले तूफान के दौरान वे आगे बढ़ रहे थे, यह सावधानी बरतते हुए कि वे दरारों से बच कर बढ़ें। ताज़ा-ताज़ा गिरी बर्फ ने दरारों के किनारों को ढ़क दिया था। उन्हें यह नज़र ही नहीं आ रहा था कि वे कहाँ शुरू और कहाँ खत्म हो रही हैं। इसने स्थिति को और जटिल और ख़तरनाक बना डाला। ऐसे में उन्हें और धीमी गति से बढ़ना पड़ा, इस उम्मीद के साथ कि किस्मत उनका साथ देगी।

दरारों पर यहाँ-वहाँ बर्फ के कमज़ोर पुल बने हुए थे। जब तक वे उन पर चढ़ना शुरू नहीं करते उन्हें यह पता ही नहीं चलता था कि वे पुल, स्लेज का भारी वज़न झेल सकेंगे या नहीं। एक भी ग़लत कदम उन्हें नीचे गिरा सकता था, जिससे सब खत्म हो सकता था।

माइक सावधानी से आगे बढ़ रहा था कि उसके सामने एक आदमकद दरार अचानक खुल गई। उसके पैरों के नीचे की बर्फ धड़ाम से नीचे गिरी और वह सिर तक नीचे जा धंसा।





रैनॉल्फ ने उसे चीखते सुना और मुड़ा। अगर वह न सुनता तो न केवल माइक की मौत हो सकती थी बल्की अंटार्कटिक पार करने का यह अभियान तभी खत्म हो जाता। बेचारा माइक एक गहरी खाई के ऊपर लटका था। किस्मत से उसकी स्लेज बर्फ में फंस गई थी। पर अगर वह ज़रा भी हिलता-डुलता . . . वह नीचे गिर मौत की गोद में समा जाता और साथ ही स्लेज को भी नीचे घसीट ले जाता।

रैनल्फ़ ने जल्दी से अपने पट्टे हार्नेस उतारा और माइक की झूलती हुई स्लेज का पिछला हिस्सा पकड़ लिया। उसने उसे कसकर पकड़ रखा था। और धीरे-धीरे, माइक की ज़िंदगी के सबसे बुरे कुछ मिनटों के लिए, वह बिना नीचे देखे सावधानी से दरार पर चढ़ता गया। दोनों ने मिलकर स्लेज को खींचा और धकेला, जब तक कि पूरी स्लेज फिर से ठोस ज़मीन पर नहीं आ गया। इस कोशिश से माइक को उल्टी जैसा महसूस हुआ। रैनल्फ़ ने कहा कि आखिर में उसका चेहरा चुकंदर के रंग का हो गया था।

जब उन्होंने रात के लिए तम्बू लगाया, तो उन्हें बाहर तूफ़ान की आवाज़ सुनाई दी। बर्फ़ आहें भर रही थी और कराह रही थी जैसा कि वह हमेशा समुद्र की ओर लगातार बढ़ते हुए करती है। किसी भी पल, बर्फ़ का एक गड़गड़ाता हुआ ढेर उनके नीचे से टूटकर उन्हें अपने साथ ले जा सकता था, और किसी को पता नहीं चलता कि वे कैसे मरे। उनके शरीर हमेशा के लिए उनके गहरे, बर्फ़ीले बिस्तरों में बंद हो जाते।

तथ्य पेटी 'ब'

स्लेज में:

51 खाने के सामान की थैलियाँ
31 (1 लीटर वाली) इंधन की बोतलें
स्की और छड़ियाँ
तम्बू, उसको तानने वाले डंडे, खूंटे और स्लीपिंग बैग
2 चूल्हे, 2 चम्मचें, 2 भगोने, सुरक्षित माचिसें
स्लेज को हवा की मदद से घसीटने के लिए पाल
रस्सी
बर्फ के स्क्रू और कुल्हाड़ियाँ
फावड़े
पेशाब करने के लिए बोतलें
दवाओं की पेटी
2 रेडियो बैटरियाँ
संकेत दीप
विज्ञान किट
सोनी वीडियो कैमरा, 9 टेप, 2 बैटरियाँ
ओलम्पस 2000 कैमरा और फिल्में
2 थर्मस फ्लास्क
स्की वाले जूते
स्लेज जैकेट

एक व्यक्तिगत थैला जिसमें वे सारी चीज़ें थीं जिनकी ज़रूरत उन्हें पड़ सकती थी:

सूइयाँ, अंगुश्त
धागे, तार
पाना
लाइटर
कमठी
पेन्सिल, डायरी
सुपरग्लू
चार्ट, नक्शा
कम्पस
सेना वाली छुरी
धूप के चश्मे
मोज़े

माइक उस रात बेहद थका हुआ था, उसका सिर चकरा रहा था। अचानक उन्हें लगा कि उनका तम्बू तूफान का सामना करने के लिए बेहद पतला है। वे रात भर सो नहीं सके। और अगले दिन भी डरावनी दरारें, अकड़ाने वाली ठंड और भारी स्लेजों का सामना करने के अलावा कुछ न था।

अगली सुबह माइक से तम्बू का परदा खोला ही नहीं गया। उसकी ठंडी उंगलियाँ हथौडों सी महसूस हो रही थीं। आख़िरकार जब उसने बाहर देखा तो वह भौंचक रह गया।

चारों ओर आँखें चुंधिया देने वाली बर्फ की मोटी परत पसरी हुई थी।

अध्याय 3

बर्फ का वह छोटा-सा टुकड़ा

जब तेज़ हवा और बर्फबारी थमी तो माइक ने पाया कि तम्बू से तीन कदम की दूरी पर एक नई दरार का नीला प्रकाश नज़र आ रहा था। अगर उन्होंने पिछली रात मीटर भर आगे तम्बू गाड़ा होता तो वे सोते-सोते ही नीचे धंस गए होते।

चार घंटे देर से निकलने के कारण उन्हें इस देरी की भरपाई भी करनी थी। सो उन्होंने पहली बार अपनी स्लेजों पर पाल लगाए। कुछ समय तक तेज़ रफ्तार से बर्फ पर फिसलते हुए बढ़ना अद्भुत था।

जिस वक्त माइक ने अगुवाई कर रहे रैनॉल्फ को चिल्लाते सुना, फौरन रुक पाने के लिए उसकी रफ्तार तेज़ थी। रैनॉल्फ दूसरी बार चीखा। ठीक उसी पल माइक ने भी सामने जो समस्या थी उस पर ग़ौर किया।

रुक पाने के लिए बहुत देर हो चुकी थी। माइक हवा में उछला। उसकी स्लेज उसके पीछे से आ उससे टकराई। हवा उसके चेहरे को छूते हुए उड़ी, समय मानो थम गया। एक डरावनी चुप्पी ने उसे आ घेरा।



रैनॉल्फ चीखने लगा, उस पता ही नहीं था कि माइक कहाँ है। इधर माइक इस कदर सदमे में था कि वह जवाब ही न दे पाया। वह एक दरार के कुछ मीटर नीचे बर्फ के एक छोटे से टुकड़े पर था। उसकी स्लेज ऊपर बर्फ की दीवार पर अटकी हुई थी। उसका सिर स्लेज से ज़रा सी दूरी पर था। अगर बर्फ का वह टुकड़ा न होता . . .।

माइक ने किसी तरह, धीरे-धीरे स्लेज को घसीटने वाले पट्टे खोले और ऊपर, एक अधिक सुरक्षित जगह चढ़ने लगा।

वह जिस ढ़लान पर चढ़ रहा था, वह किसी भी क्षण टूट सकती थी, और वह फिसल कर नीचे खड्ड में गिर सकता था। माइक को अपने दिल की धड़कनों की गूंज सुनाई दे रही थी। उसने अपने दिमाग की हरेक कोषिका को अपने अगले कदम पर केन्द्रित किया।



तब रैनॉल्फ ने एक रस्सी नीचे फेंकी और स्लेज पर रखे सामान को एक-एक कर उतारा। क्योंकि एक भी चीज़ को खोना उन्हें भारी पड़ सकता था। रैनॉल्फ ने टूटी स्लेज को खींचा और आख़िर में माइक की ऊपर आने में मदद की। स्लेज की मरम्मत कर उसे वापस जोड़ने में उन्हें घंटों लगे।

तथ्य पेटी 'स'

खाने के डब्बों में इन चीज़ों के पैकेट थे:

चीनी
सूखा दूध
चॉकलेट
मक्खन
कोको
मक्के का तेल
ओटमील
सूप
बिस्कुट
सीरियल
किशमिश
सूखा माँस
फ्रोज़न (जमे हुए)
सुखाए खाने
चाय
फ्रोज़न सब्ज़ियाँ
सूअर का माँस
फ्लैप जैक (टिकिया)
सूखा दूध

उस रात जब उन्होंने तम्बू गाड़ा आधी रात हो चुकी थी। तब उनके सामने एक और ऐसी समस्या आई जो उनके सफ़र को खत्म कर सकती थी। उनके चूल्हे में रिसाव था और उसे इंधन की बोतल से जोड़ना असंभव था। बिना चूल्हे के गुज़ारा चल ही नहीं सकता था। उन्हें बर्फ पिघलाने, पानी उबालने, खाना गर्म करने और अपने पैरों की उंगलियों को गरमाने के लिए चूल्हे की ज़रूरत थी। दोनों परेशान और चिड़चिड़े हो गए। तब रैनॉल्फ ने दूसरा चूल्हा निकाला, पर वह उसे भी इंधन की बोतल से न जोड़ सका। कुछ देर तक हताशा ने उन्हें घेर लिया।

पर वे जुटे रहे। उन्हें कोई जुगत तो भिड़ानी ही थी। माइक कुछ अतिरिक्त प्लास्टिक के वॉशर लेकर बैठा। उसने नाखून काटने वाली कैंची से उन्हें काटा-छाँटा। और उनकी मदद से रिसाव को दुरुस्त करने की कोशिश करता रहा। इस तरह उसने जुगाड़ बैठाया और इस उम्मीद से माचिस की तीली जलाई कि वे धमाके के साथ दक्षिणी ध्रुव तक न उड़ जाएं।

जुगाड़ कारगर रहा।



अध्याय 4

बालों से भरा सूप



जब आसमसन साफ़ हुआ और सूरज तपने लगा उन्होंने अपने कपड़े उतारे। कुछ ही समय में उनके बदन में खुजली शुरू हो गई। वैसी खुजली जो तब होती है जब आप कई दिनों से नहाए न हों। उन्होंने अपने भारी-भरकम जैकेट उतार फेंके ताकि कपड़ों का वज़न कम हो। पर बाद में उन्हें ऐसा करने पर तब पछतावा हुआ, जब 60 नॉट रफ्तार की तेज़ हवा उनके पोर-पोर में घुसी और छालों को फोड़ने लगी।

आठवाँ दिन

आठवें दिन के आने तक उनके पैर नम और छालों से भर चुके थे, उनके हाथ-पैर लगातार दुख रहे थे, और उनके कपड़े उनकी चमड़ी को छील रहे थे।

एक सुबह जब रैनॉल्फ जागा तो उसने पाया कि उसके होंठ धूप में झुलसने के कारण एक-दूसरे से चिपक चुके थे। उसने बेहद सावधानी से, धीरे-धीरे उन्हें जुदा किया। ओज़ोन स्तर में छेद के कारण सूरज की अल्ट्रा वायलेट किरणें अपनी लपटों से उनकी चमड़ी को झुलसाए दे रही थीं। उनके पास जो सन स्क्रीन (धूप से बचाव का क्रीम) था, उसे उन्हें पूरे सफ़र तक चलाना था।, सो वे उसका सावधानी से इस्तेमाल कर रहे थे। जब रैनॉल्फ अपना दलिया खाने बैठा उस पर रसभरी के रस के नहीं, बल्की खून के छींटे नज़र आए।



जल्द ही इस छोटी समस्या ने विकट रूप धर लिया। रैनॉल्फ की एक ख़राब आदत यह थी कि वह तम्बू के बीचों-बीच बैठ अपनी दाढ़ी ओर भौंहों के बाल छांटता था। माइक को ये बाल अपने कपड़ों, जूतों, यहाँ तक कि अपने सूप में भी मिलते। उन्होंने इस पर चर्चा की और रैनॉल्फ मान गया कि वे आगे से बालों की छंटाई करते समय अपने घुटनों के बीच एक थैली रखेगा और सारे बाल उसमें डालेगा।

रैनॉल्फ इस बात की शिकायत करने लगा कि माइक तेज़ रफ्तार से आगे बढ़ता है। माइक ने इस शिकायत पर खास ध्यान न दिया और कहा कि रैनॉल्फ बात का बतंगड़ बना रहा है। इससे दोनों के बीच तनाव भरी प्रतिस्पर्धा बढ़ती गई।



अभियान के दौरान माइक की एक ज़िम्मेदारी पेशाब और खून के नमूने लेने की थी, ताकि लौटने पर उनकी जाँच की जा सके। हर रात उन्हें एक-दो बार पेशाब की बोतल का इस्तेमाल करना पड़ता था। माइक को पेशाब की मात्रा पर नज़र रखनी पड़ती थी और उसका नमूना निकालना पड़ता था।

हर दसवें दिन माइक को जाँच के लिए रैनॉल्फ का खून भी निकालना पड़ता था। बदकिस्मती से रैनॉल्फ उन लोगों में था जिसे सूइयों का ख़ौफ था। सो वह ऐसा बरताव करता मानो उसे यातना दी जा रही हो। कभी ऐसा भी होता कि रैनॉल्फ की नस ही नहीं मिलती। तो कभी ठंड के कारण सूई से खून खींचा ही नहीं जा सकता। रैनॉल्फ के लिए यह ऐसा दुःस्वप्न था जो समय के साथ और भयावह होता जा रहा था।

कभी-कभार दोनों के मन में यह ख़याल उठता कि काश दूसरा हार मान हथियार डाल दे, ताकि वे सफ़र बीच में छोड़-छाड़ घर लौट जाएं। पर उनमें से कोई भी पहले हार मानने वाला नहीं बनना चाहता था, सो वे घिसटते-रपटते आगे बढ़ते रहे।



एक दिन एक भारी बर्फीला तूफान आया, सो दोनों ही दिन भर तम्बू में दुबके रहे। इस दौरान उनके पास करने को अपने औज़ारों की मरम्मत के अलावा कुछ न था। सो रैनॉल्फ ने अपनी चड्डी की इलास्टिक से अपने होंठों को ढ़कने के लिए एक मुखौटा बनाया।



जब दिन का चलना खत्म होता दोनों खोजी अपना मानसिक संतुलन वापस पाने की कोशिश करते। तम्बू में घुसने के बाद वे कुछ देर सुस्ताते कठिन परिस्थितियों के बावजूद वे दोनों दोस्तों-सा बरताव कर पाते, जो दरअसल वे थे भी।

तब फैल्ट पेन से चूल्हे के डब्बे के ऊपरी हिस्से पर शतरंज का बोर्ड बनाया। मोंहरों के नाम पर वे पेशाब की नलिकाओं को इस्तमाल करते। मार्क ने उनके ऊपरी हिस्से को अपने लिए लाल और रैनॉल्फ के लिए नीला रंग दिया। भरी हुई नलिकाएं बेशक बादशाह और बेगम थे। माइक ने रैनॉल्फ को शतरंज खेलना सिखाया और उसने जल्द ही खेल सीख भी लिया। खेल की एक बाज़ी उन्हें अगले दिन भर खुश रखती थी।

बाहर बर्फ पर वे दोनों जानी दुश्मनों-सा बरताव करते, पर तम्बू में घुसते ही यह सब भुला दिया जाता और वे फिर से दोस्त बन जाते।

अध्याय 5

और समस्याएं!

सबसे बदतर था ऊपर चढ़ना। उनकी स्लेजें अक्सर उन्हें पीछे की ओर वापस खींचतीं। वे जितने कदम चढ़े हों, उससे ज़्यादा कदम पीछे सरक आते। कभी उनकी चाल घोंघे से भी सुस्त हो जाती। माइक गौर करने लगा कि वह कितना दुबला और कमज़ोर हो चला था। अपने स्लीपिंग बैग में घुसने पर उसे अपनी ही हड्डियाँ चुभने लगी थीं। और अभी तो उन्होंने आधा रास्ता ही पार किया था।

सर रैनॉल्फ एल्पस् पहाड़ियों पर प्रशिक्षण के दौरान स्लेज को खींचने का अभ्यास करते हुए।



पच्चीसवाँ दिन

पच्चीस दिनों बाद वे दोनों इस कदर थक चुके थे कि वे अभियान को त्यागने का सपना देखने लगे। अभियान को सफलता से पूरा कर पाने की संभावना काफ़ी कम थी। वापस लौटने के लिए उन्हें रॉस-सी तक पहुँचना था जहाँ से जहाज़ *सीक्वैस्ट* उन्हें लौटा ले जाने वाला था। यह जहाज़ तय तिथि के बाद उनका इन्तज़ार नहीं कर सकता था, क्योंकि मौसम और समुद्र की स्थितियाँ उसके बाद सुरक्षित नहीं थीं।

सास्त्रुगी (बर्फ पर बनी लहरदार लकीरें) पर चढ़ने ने उन्हें थका दिया था - दिन-ब-दिन इन ऊबड़-खाबड़ आकृतियों पर स्लेज को घसीटना, बार-बार पीछे फिसल आना, गिरना, दूसरी ओर जा टकराना उन्हें मुश्किल लगा था। और इस मशक्कत के बाद उनके सामने दूसरे सास्त्रुगी को पार करने की कोशिश करने के सिवा कुछ न था, जो पहले वाले से भी डरावनी हो सकती थी। आधे समय उनकी स्लेज उनकी पीठ से टकराती और कभी-कभार वे बर्फीली चट्टानों में तब जा फंसती जब वे ऊपर चढ़ रहे होते। दोनों कई बार तब भी मुश्किलों में फंसे जब उनकी स्की बर्फ में धंसी या कुछ और घटा।

माइक स्ट्राउड अपनी स्लेज को
एक बार फिर से घसीटते हुए।



तब वे धीमे से बड़बड़ाते।

यह नाशुक्राना काम था। माइक का पैर मवाद से सूज गया था और वह एंटीबायोटिक ले रहा था। जब भी उस पाँव पर दबाव पड़ता वह भयानक दर्द महसूस करता। यह उन सामान्य घावों, दुखते कंधों और कूल्हों के अतिरिक्त था, जो वैसे भी हर दिन को पिछले से ज़्यादा कठिन बना रहे थे।

जब उन्होंने 82 वें अक्षांश को पार कर लिया, वे कुछ मिनटों के लिए खुश हुए और उन्होंने एक बड़ा चॉकलेट खा इसका जश्न मनाया। इस चॉकलेट का स्वाद उन्हें स्वार्गिक लगा।





माइक ने अपना ध्यान उस खिलौने-घर पर लगाया जो वह घर पहुँचने के बाद अपने बच्चों के लिए बनाने वाला था। उसने घर की हरेक बारीकी की योजना कई बार बनाई। यह उसके दिमाग को अपने घावों और आगे आने वाले सप्ताहों की पेचीदगियों से दूर रखने का कारगर उपाय रहा।

पर जल्द ही हालात और ख़राब हुए। माइक का पेट गड़बड़ाया और उसे बीच रात में तीन बार जागना पड़ा।

सुबह कमज़ोरी और चक्कर आने के बावजूद वह चल पड़ा। वे आगे बढ़ चले। पर माइक तमाम कोशिशों के बावजूद अधिक देर चल न पाया। तकरीबन चालीस मिनट बाद वह इतनी तकलीफ में था कि उसके लिए एक कदम भी आगे बढ़ना मुश्किल हो गया।

रैनॉल्फ उससे बेहद नाराज़ हआ, क्योंकि उन्होंने दिन की शुरुआत की ही थी। उनके पास बरबाद करने के दिन थे भी कहाँ।



माइक ने कुछ गोलियाँ खाईं, गरम चाय पी और चार घंटों से भी ज़्यादा सोया। रैनॉल्फ ने माइक के खर्राटों के दौरान एक उपन्यास का पूरा कथानक ही रच डाला।

बाद में उन्होंने आगे बढ़ने की फिर से कोशिश की, पर माइक ने दो-एक घंटों बार फिर से हथियार डाल दिए। रैनाल्फ उससे बेहद ख़फा था क्योंकि दिन के कई घंटे बरबाद हो गए थे। उसने माइक पर आरोप लगाया कि उसने पहले अपनी ऊर्जा बचाने के बदले तेज़ रफ्तार अपनाई थी।

तब माइक ने पाया कि उसकी घड़ी काम ही नहीं कर रही है। रैनॉल्फ ने कहा कि उसे अंटार्कटिक का सफ़र शुरू करने के पहले ही अपनी घड़ी की जाँच करवानी चाहिए थी। उसने तंज कसा कि माइक को इस ज़रूरी काम तक के लिए फुर्सत नहीं मिली थी। अब दो लोगों के बीच एक घड़ी से परेशानी उपजी थी, क्योंकि दिशा तय करने के लिए माइक को भी घड़ी की दरकार थी। अब तो रैनॉल्फ आपा खो बैठा। अंत-तंत उसने माइक को अपनी घड़ी दी, पर इस चेतावनी के साथ कि हर घंटे बाद उसे बताना होगा ताकि वे अगुवाई करने की पारी बदल सकें।



माइक ने उस शाम अपने घाव को चीरा ताकि मवाद निकाल सके। मरहम-पट्टी के बाद उसे इतनी राहत महसूस हुई जितनी कई दिनों से महसूस ही नहीं की थी। फिर भी वह अपने साथी से बेहतर स्थिति में था, क्योंकि रैनॉल्फ के पैरों में नौ पट्टियाँ थीं।

उसके पैरों के कुछ प्लास्टर इस कदर चिपक चुके थे कि उन्हें टुकड़े-टूकड़े काट कर उतारना पड़ा।

उनका हाल इतना ख़राब हो चुका था कि उन्होंने भविष्य के बारे में सोचना ही बन्द कर दिया था।

अध्याय 6

चरैवेति-चरैवेति

जब वे अगली सुबह निकले हवा की रफ्तार 8 नॉट थी। भयानक सर्दी थी। इतनी कि वे अपने फ्लास्क से गरम पेय की चुस्कियाँ तक न ले पाए। अमूमन वे कई बार ज़रा देर को रुकते थे ताकि आगे बढ़ते जा सकें। और यों दिन भर चलने के बाद कुछ दूसरा करने की उम्मीद के साथ अपना दिन ख़त्म करते थे।





सर रैनॉल्फ ने पाल की मदद से बढ़ने पर खुद को एक दरार के पास पाया।

उन्होंने पाल का इस्तमाल करने की कोशिश की। पर हवा उन्हें दरारों के बर्फीले किनारों तक उड़ा ले गई। अब वे इस हालत में नहीं थे कि नई चोटों को झेल पाते। उन्होंने तेज़ी से बढ़ने का ख़याल त्यागा और पाल समेट कर रख दिए।

माइक अब भी अपने कमज़ोर पेट से परेशान था और रैनॉल्फ भी बीमार महसूस कर रहा था। दोनों मुसाफिरों की हालत इतनी ख़राब थी कि वे खुद पर हंसने के अलावा कुछ कर नहीं सकते थे। लम्बी दूर जाना मुश्किल था। उनके स्लेज ताज़ा गिरी बर्फ में धंसते जा रहे थे, और हरेक कदम बढ़ाने में उन्हें अतिमानवीय ताकत लगानी पड़ रही थी। आगे बढ़ना ऐसा लग रहा था मानो वे गाढ़े कीचड़ में चलने की कोशिश कर रहे हों।

रैनॉल्फ ने सूरज की किरणों से झुलसे चेहरे को बचाने के लिए एक मुखौटा बनाया। उसकी दाढ़ी कुछ समय बाद इस मुखौटे से चिपट गई। जब रैनॉल्फ ने उसे उतारने की कोशिश की उसके गालों की चमड़ी भी उखड़ गई और वह हिस्सा लहू-लुहान हो गया। जल्द ही यह घाव संक्रमित हो सूजने लगा। एन्टीबायोटिक खत्म होने की कगार पर थे। पर माइक को आख़िरी गोलियाँ रैनॉल्फ को देनी पड़ीं।

सर्दी इतनी भयंकर थी कि उस रात जब तम्बू लगाया गया रैनॉल्फ के चेहरे पर हिमलम्ब (आइसिकल्स) लटक रहे थे।

इस समय तक रैनॉल्फ हर शाम अपने चेहरे पर जम चुके बालाक्लावा (ऊनी कनटोप) को एक छोटी-सी कैंची से काट कर छुड़ना पड़ता था। यह दृश्य सुन्दर नहीं था। पर कम से कम वह यह काम एक कटोरे पर करता था। सो इस बार सूप में बाल नहीं तैरते थे।



चौंतीसवां दिन

चौंतीस दिनों बाद वे दक्षिणी ध्रुव के आधे रास्ते में थे। आगे एक महीना तो क्या एक दिन भी चलने का ख़याल खुशनुमा नहीं था।

कायदे से उन्हें हर दिन 14 किलोमीटर पार कर लेने चाहिए थे। एक दिन भी पिछड़ने का मतलब था उस खाने का उपयोग करना, जो पहले से ही नपा-तुला था। यह ख़तरनाक था। वे पहले ही काफ़ी दुबले हो चुके थे और दिन की समाप्ति पर अपनी ज़रूरत से कम कैलोरी खाना उन्हें भूखों मार रहा था। वे इतने भूखे रहते कि दोनों को लगता कि अगला बेईमानी कर रहा है। अपने जायज़ हिस्से से ज़्यादा खा ले रहा है। हर खाने के दौरान वे पाँच साल के बच्चों की तरह एक-दूसरे पर पैनी नज़र रखने लगे थे।

साथ ही उन्हें डरावने बर्फीले तूफानों से भी निपटना पड़ रहा था। तूफानों से सब कुछ ज़र्द-सफेद हो जाता। आपको पता ही नहीं चलता कि आप कहाँ हैं। ऐसे में आप अपना मनो-संतुलन खो, नीम-पागल हो सकते हैं। ऐसे मौसम में खोजी सीधे गहरी दरारों की ओर बढ़ सकते हैं।



एक भारी बर्फबारी के बाद माइक ने एक भारी गलती कर दी। उसने अपने धूप के चश्मे दो घंटों के लिए उतार दिए। इसलिए क्योंकि वह उन्हें बार-बार पोंछने से उकता गया था। वह धूप के चश्मे न पहनने के ख़तरों के बारे में भूल ही गया था।

माइक को इस गलती की कीमत बाद में चुकानी पड़ी, उसे हिम अंधता (स्नो ब्लाइंडनैस) हो गई। इस रोग में जो तकलीफ होती है उसकी कल्पना नहीं की जा सकती। हर बार पलक झपकाने पर ऐसा लगता है मानों गर्म सूइयाँ आँखों में चुभ रही हों। पर माइक के पास उस दर्द को सहने के अलावा कोई चारा भी नहीं था।

इधर दोनों का वज़न न केवल लगातार घटता जा रहा था बल्की उनकी माँपेशियाँ भी।



फाइन्स दक्षिणी ध्रुव पर अपने नाटकीय रूप से कम हुए वज़न को दिखाते हुए।



एक चिकित्सक शीतदंश से घायल हाथों का उपचार करते हुए।

जब बाद में जाँचे की गईं पता चला कि रैनॉल्फ हर दिन तकरीबन 10,000 कैलोरी खर्च रहा था। जबकि खाने से उसे सिर्फ 5,200 कैलोरी मिल रही थीं। माइक ने बताया कि वह अपने वज़न को ढ़लते महसूस कर पा रहा था। सफ़र के इक्यावनवें दिन तक दोनों अपना 20 प्रतिशत वज़न खो चुके थे।

त्रेपनवाँ दिन

जब माइक एक बार फिर बीमार पड़ा, उन्हें निकलने के सिर्फ दो घंटों बाद ही रुक जाना पड़ा। साथ ही तापमान इतना गिरा कि माइक ठंड से त्रस्त हो गया। वह साफ सोच ही नहीं पा रहा था। उसकी उंगलियाँ सुन्न पड़ गईं और पैर शीतदंश से घायल हो गए।

पिछले सप्ताहों के दौरान की गई मशक्कत उन्हें भारी पड़ने लगी थी।

अध्याय 7

ज़िन्दा से अधिक मुर्दा

अड़सठ दिन बाद जब वे दक्षिणी ध्रुव पहुँचे उनके पास सुस्ताने का समय नहीं था। वे वहाँ करीब दो घंटे रुके, उन्होंने चाय पी, अमरीकी महिलाओं के एक दल से ख़बरों का आदान-प्रदान किया, तब उन्हें वापस निकलना पड़ा। इसके बाद हालात तेज़ी से बिगड़े।

दिनों-दिन तक पाँच नॉट तीव्रता की हवाएं चलती रहीं। उन्हें अफ़सोस हुआ कि वे अपने गरम डुवे जैकेट फेंक चुके थे। चट्टानों-सी कठोर बर्फ पर अपने छालों से भरे पेर रखना और शीतदंश से अकड़ी उंगलियों से छड़ी थामना बेहद मुश्किल लगने लगा था।

पिचहत्तरवाँ दिन

पिचहत्तरवें दिन तक रैनॉल्फ के पैर इतनी बुरी हालत में थे कि हर सुबह जूते पहनना यातना भोगने-सा लगता था।



शीतदंश से ग्रस्त पैर

हालांकि रैनॉल्फ दर्द की गोलियाँ नहीं खाना चाहता था क्योंकि वे उसे उनींदा बना देती थीं, माइक ने उसे जबरन कुछ गोलियाँ खिलाईं। माइक खुद बेहद कमज़ोर और भूखा था, मगर भारी दर्द नहीं झेल रहा था।

जब हवा की ठंडक (विंड चिल फैक्टर) नकारात्मक नब्बे डिग्री तक गिर गई, उनकी शारीरिक मुश्किलें असहनीय हो चलीं। उनके लिए अब हिलना-डुलना तो दूर, साँस ले पाना तक कठिन हो चुका था। अपने स्लेज को पाल की मदद से खींचते समय माइक अपनी स्की की छड़ियाँ खो चुका था। उसे रैनॉल्फ से एक छड़ी लेनी पड़ी, जिसने दोनों की रफ्तार और कम कर दी।

अपनी ज़रूरत के राशन से आधे पर गुज़ारा करने के कारण दोनों गिरने के कगार पर थे और किसी तरह लोहे-सी कठोर बर्फ पर धकियाते-फिसलते बढ़ रहे थे। उन्हें यह सावधानी बरतनी पड रही थी कि वे किसी गहरे खड्ड में न जा गिरें। घंटे-दर-घंटे किस्मत ने ही उन्हें गिर कर होने वाली मौत से बचाया।



अंटार्कटिक का बीयर्डमोर ग्लेश्यिर (हिमनद), जो 260 मील (418 किलोमीटर) लम्बा और विश्व का सबसे बड़ा हिमनद है।

बयासीवें दिन पाल के सहारे बढ़ते समय माइक का पैर मुड़ा। वह दर्द के बावजूद बढ़ता रहा। काफ़ी बाद में उसे पता चला कि उसके टखने की हड्डी तड़क चुकी थी।

छियासीवाँ दिन

इस दिन वे बीयर्डमोर हिमनद की उस आइस शैल्फ (बर्फ पट्टी) पर पहुँचे जो उनके सफ़र का आख़िरी हिस्सा था।

पर सफ़र आरंभ करने के छियासी दिनों बाद, जब उन्होंने नब्बेवीं बार अपना तम्बू गाड़ा और राशन को देखा तो पाया कि उनके पास सिर्फ नौ दिनों के लिए खाने की सामग्री है।

वे *सीक्वैस्ट* जहाज़ से काफ़ी दूर थे जिसे आठ दिन बाद निकल जाना था। उन्हें फ़ौरन फैसला करना था। उनका इकलौता सी-प्लेन चार दिन बाद उस इलाके से उड़ जाने वाला था! अगर वह और रुकता तो रैनॉल्फ को हर अतिरिक्त दिन के लिए दो हज़ार पाउण्ड देने पड़ते।

उन्होंने उस बर्फ पट्टी के एक हिस्से को पार किया ताकि वे हवाई जहाज़ के उतरने के लिए एक सुरक्षित स्थान तक पहुँच जाएं। और पाँच दर्दनाक घंटे चलने के बाद माइक इस कदर चुक गया था कि वह शब्दों का साफ़ उच्चारण तक नहीं कर पा रहा था। रैनॉल्फ के पास फौरन तम्बू गाड़ उसके लिए चाय और चॉकलेट बनाने के अलावा कोई चारा नहीं बचा। यह कयामत का दिन था।

तूफानों का मौसम शुरू होने वाला था। सो रैनॉल्फ ने आख़िरकार सुझाया कि वे अभियान को पूरा करने की कोशिश छोड़ दें।





समाप्ति का दिन!

पिच्यानावेवां दिन

जब वे अंततः स्की प्लेन में बैठे, उन्हें अहसास हुआ कि वे किस कदर खस्ताहाल हो चुके थे। वे ज़िन्दा से ज़्यादा मुर्दा महसूस कर रहे थे। जहाज के अन्दर की गरमी ने उनके हाथ-पैर सुजा दिए, उन्हें चक्कर आने लगे, वे बोलने तक के काबिल नहीं थे।

क्या यह सब सचमें सार्थक था?

पिच्यानवें दिनों में इन बहादुर पुरुषों ने दुरूह परिस्थितियों में 2,380 किलोमीटर की दूरी तय की थी। उनकी इस उपलब्धि को गिनिस बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड्स् में इन शब्दों में दर्ज किया गया: यह सबसे लम्बी ध्रुवीय स्लेज यात्रा थी जिसे बिना किसी मदद के अंटार्कटिक पार करने के प्रयास में आर. फाइन्स तथा एम. स्ट्राउड ने पूरी की।

वे दान के लिए बीस लाख पाउण्ड इकट्ठा कर सके। उन्हें ओबीई (ऑफिसर ऑफ द ऑर्डर ऑफ द ब्रिटिश अम्पायर) से सम्मानित किया गया।

कहानी की पृष्ठभूमि

अद्भुत तथ्यः

- दक्षिणी समुद्र में व्हेल मछलियों की बारह से भी अधिक प्रजातियाँ हैं, जिनमें ब्लू व्हेल, मिन्के व्हेल, हम्पबैक व्हेल, किलर व्हेल (जिसे नीचे दिए गए चित्र में दर्शाया गया है) और लौंग फिन्ड व्हेल शामिल हैं।
- अंटार्कटिक की खाद्य श्रृंखला क्रिल (छोटी झींगा मछली) पर आधारित है, जो अधिकतर व्हेल मछलियों का प्रमुख आहार है। दुख की बात यह है कि क्रिल का अत्यधिक शिकार इस पारिस्थितिक तंत्र को नष्ट करे दे रहा है।
- वहाँ डॉल्फिन (सूंस), पॉरपोइज़ (शिंशुमार) और छह प्रकार की सील मछलियाँ पाई जाती हैं, जिनमें एलिफैन्ट (हाथी) सील भी शामिल है।



- पिछले पचास वर्षों में अंटार्कटिक के कुछ हिस्सों का तापमान 2.5 डिग्री सेंटिग्रेड बढ़ा है। अगर पश्चिम की बर्फ की चादर पिघलती है - तो समुद्री पानी की सतह 5-6 मीटर तक बढ़ सकती है।
- 5 मार्च 2002 को लार्सन आइस शैल्फ (बर्फ का 3,250 वर्ग किलोमीटर भाग) टूट कर समुद्र में गिरा।
- 27 देशों के वैज्ञानिक अंटार्कटिक में काम करते हैं। नीचे दिया गया चित्र अंटार्कटिक के एक शोध केन्द्र को दर्शाता है।
- अगर आप और दर्द झेल सकते हों . . . तो आप इस सफ़र के बारे में रैनॉल्फ फाइन्स की रचना *माइण्ड ओवर मैटर* तथा माइक स्ट्राउड की कृति *शैडोस् ऑन द वेस्टलैण्ड* पढ़ें।



अंटार्कटिक का रोमांच

यह कहानी पहली बार बिना किसी मदद के अंटार्कटिक को पार करने की सत्य कथा है। न कुत्ते, न बचाव के हवाई जहाज़। केवल दो पुरुष और उनके ठंसे हुए स्लेज और यह कर पाने वाले पहले इन्सान बनने की उनकी अदम्य आकांक्षा!